Regd.with the Registrar of News Papers of India at PUN BIL/2002/07848
Postal Reg.No.GDP-41/2017-19

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

Annual Subscriptioon: Rs-210/-
(Per Issue: Rs-20/-
Weight: 50-100gms/Issue

जनवरी 2021 ई०

मजलिस अंसारुल्लाह कम्बालाक्कड़ (केरला) की तरफ़ से ह्यूमेंनिटी फर्स्ट की सहायता से लगाए गए ट्यूबवेल का एक दृश्य

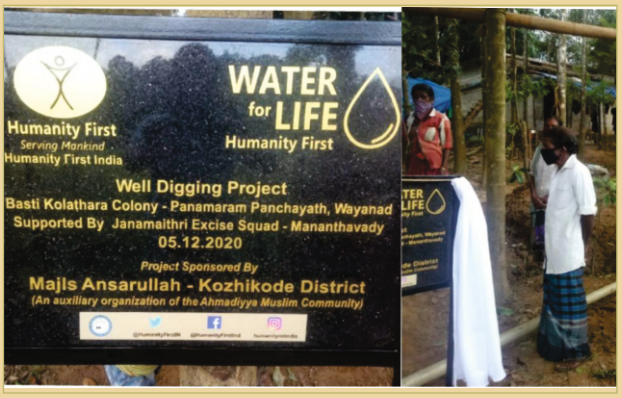

इस अवसर पर लगाए गए नेमबोर्ड का एक दृश्य

1 अक्टूबर 2020 को यादगीर के एक हलका में आयोजित एक तरबियती इजलास का एक दृश्य

इस अवसर पर उपस्थित मेम्बरान का एक दृश्य

ज़िला वेस्ट गोदावरी (आंध्रा प्रदेश) में हुए
बिस्मिल्लाह कार्यक्रम के स्टेज का एक दृश्य

श्री मुख़्तार अहमद ज़ईम अंसारुल्लाह बुढानु
एक सरकारी अधिकारी को
अहमदिया जमाअत का लिट्रेचर भेंट करते हुए

श्री मक़सूद अहमद शर्क हैदराबाद
एक सरकारी अधिकारी को
अहमदिया जमाअत का लिट्रेचर भेंट करते हुए

श्री मौलाना मुहम्मद कलीम ख़ान जुबिली हॉल
में आए हुए दो गैर अज़ जमाअत मौलवी साहिबान
को अहमदिया जमाअत का परिचय देते हुए

12 दिसंबर 2020 को मुहल्लाह मसरूर
(क़ादियान) में आयोजित तरबियती इजलास
अंसारुल्लाह के स्टेज का एक दृश्य

मजलिस अंसारुल्लाह हलका महदीपटनम
(हैदराबाद) के पिकनिक का एक दृश्य

निगरान
अताउल मुजीब लोन
सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़
उप-सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
09915379255
मैनेजर
मक्सूद अहमद भट्टी
Ph. +91 84272 63701
कम्पोज़िंग
तसनीम अहमद बट्ट
प्रैस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस
क़ादियान
वार्षिक मूल्य : 210 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर
प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا کُوۡنُوۡۤا اَنۡصَارَ اللّٰہِ
سورۃ الصّف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 19   **जनवरी 2021**   **Issue - 1**

विषय सूची	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय -समस्त गुनाहों की जड़ शराब है	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन - एक महान इन्किलाब पैदा करें ।	6
समापन ख़िताब हुज़ूर अनवर(अ) सालाना इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्लाह बर्तानिया 2019 ई (अन्तमि भाग..4)	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَ الْمَيْسِرُ وَ الْاَنْصَابُ وَ الْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۹۱﴾ اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَ الْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ وَ الْمَيْسِرِ وَ يَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ عَنِ الصَّلٰوةِ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿۹۲﴾

(सूरः अल्माइदः आयत 91-92)

अनुवादः हे वे लोगो जो ईमान लाए हो यक़ीनन मदहोश करने वाली चीज़ और जुआ और बुतों की उपासना और तीरों से क़िस्मत आज़माना ये सब नापाक शैतानी कार्य हैं। अतः उनसे पूरी तरह बचो ताकि तुम कामयाब हो जाओ। शैतान तो यही चाहता है कि शराब और जूए के माध्यम से तुम्हारे बीच दुश्मनी और द्वेष पैदा कर दे और तुम्हें ज़िक्रे इलाही और नमाज़ से रोके रखे। तो क्या तुम रुक जाने वाले हो?

दर्सुल हदीस

عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ كُنْتُ اَسْقِيْ اَبَا طَلْحَةَ الْاَنْصَارِيَّ وَاَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الْجَرَّاحِ وَاُبَيَّ بْنَ كَعْبٍ شَرَابًا مِنْ فَضِيْخٍ وَهُوَ تَمْرٌ فَجَاءَهُمْ اٰتٍ فَقَالَ اِنَّ الْخَمْرَ قَدْ حُرِّمَتْ فَقَالَ اَبُوْ طَلْحَةَ يَا اَنَسُ! قُمْ اِلٰى هٰذِهِ الْجِرَارِ فَاكْسِرْهَا قَالَ اَنَسٌ فَقُمْتُ اِلٰى مِهْرَاسٍ فَضَرَبْتُهَا بِاَسْفَلِهِ حَتّٰى انْكَسَرَتْ۔

(सहीह बुख़ारी किताबुल ख़बरुल वाहिद बाब मा जाआ फी इजाज़त अल्वाहिद अस्सदूक़)

अनुवाद -अनुवादः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि वर्णन करते हैं कि मैं अबू तलहा अन्सारी अबू उबैदा बिन जर्राह और उबय्य बिन कअब को खजूर की शराब पिला रहा था। किसी आने वाले ने बताया कि शराब हराम हो गई है यह सुनकर अबू तलहा ने कहा कि अनस उठो। और शराब के मटकों को तोड़ डालो। अनस कहते हैं कि मैं उठा और पत्थर की कोंडी का निचला हिस्सा मटकों पर दे मारा और वे टूट गए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

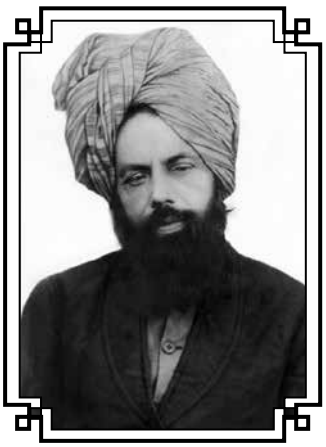

शरीयत ने सेहत के लिए हानिकारक चीज़ों को ईमान के लिए हानिकारक क़रार दिया है।

"हदीस में आया है وَمِنْ حُسْنِ إِسْلَامِ الْمَرْءِ تَرْكُ مَا لَا يَعْنِيهِ अर्थात इस्लाम की सुन्दरता यह भी है कि जो चीज़ ज़रूरी न हो वे छोड़ दी जाए । इसी तरह पर ये पान, हुक्का, ज़रदा (तंबाकू) अफीम इत्यादि ऐसी ही चीज़ें हैं। बड़ी सादगी यह है कि इन चीज़ों से परहेज़ करे। क्योंकि अगर कोई और भी नुक़्सान उनका यदि मान लिया जाए न हो तो भी इस से इब्तिला आ जाते हैं और इन्सान मुश्किलों में फंस जाता है.. उम्दा सेहत को किसी बेहूदा सहारे से कभी नष्ट नहीं करना चाहिए। शरीयत ने ख़ूब फ़ैसला किया है कि इन सेहत को हानि पहुंचाने वाली चीज़ों को ईमान को हानि पहुचाने वाला क़रार दिया है और उन सबकी सरदार शराब है। यह सच्ची बात है कि नशों और तक़्वा में शत्रुता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 292)

"हे बुद्धि वालो! यह दुनिया हमेशा की जगह नहीं । तुम सँभल जाओ। तुम हर एक सीमा से बढ़ने को छोड़ दो। हर एक नशा की चीज़ को तर्क करो। इन्सान को तबाह करने वाली सिर्फ शराब ही नहीं बल्कि अफीम , गाँजा, चरस, भंग , ताड़ी और हर एक नशा जो हमेशा के लिए आदत कर लिया जाता है वह दिमाग़ को ख़राब करता और आख़िर हलाक करता है। अत: तुम इस से बचो। हम नहीं समझ सकते कि तुम क्यों इन चीज़ों को इस्तिमाल करते हो जिनकी शामत से प्रत्येक वर्ष हज़ारों तुम्हारे जैसे नशा के आदी इस दुनिया से कूच करते जाते हैं और आख़िरत का अज़ाब अलग है। परहेज़गार इन्सान बन जाओ ताकि तुम्हारी उमरें ज़्यादा हों और तुम ख़ुदा से बरकत पाओ। सीमा से अधिक अय्याशी में व्यतीत करना लअनती ज़िन्दगी है। सीमा से ज़्यादा बुरे आचरण और निर्लज्ज होना लअनती है।"

(किश्ती नूह,रुहानी ख़ज़ायन भाग19 पृष्ठ 71,71)

"हे मुस्लमानो.... तुम्हारे नबी अलैहिस्सलाम तो हर एक नशा से पवित्र और मासूम थे। जैसा कि वह वास्तव में मासूम हैं। अत: तुम मुस्लमान कहला कर किस का अनुकरण करते हो। क़ुरआन इंजील की तरह शराब को हलाल नहीं ठहराता। फिर तुम किस दस्तावेज़ से शराब को हलाल ठहराते हो। क्या मरना नहीं है।"

(किश्ती नूह,रुहानी ख़ज़ायन भाग19 पृष्ठ 71,71, हाशिया)

सम्पादकीय

समस्त गुनाहों की जड़ शराब है।

आज दुनिया विभिन्न प्रकार की नशा की आदतों में पीड़ित होने के कारण से जन साधारण तथा बड़े लोग शारीरिक तथा आर्थिक हानि का शिकार हो रहे हैं। चूँकि नशा में डूबा हुआ इन्सान न केवल सिर्फ अपनी ज़ात को बल्कि घर वालों और समाज में अन्य लोगों को भी बहुत अधिक नुक़्सान पहुँचाता है। यही कारण है कि इस की रोक-थाम के लिए दुनियावी हुकूमतें कई क़ानून और जुर्माने अपने शहरियों पर लागू कर चुकी हैं। मार्च 11 को No Smoking Day, मई 31 को No Tobacco Day मनाया जाता है। ताकि लोगों को नशा के नुक़्सानात से सूचित किया जाए। 2008 ई में World Health Assembly में भारत की तरफ़ से यह परामर्श प्रस्तुत हुआ कि महात्मा गांधी का जन्म जिन विश्व व्यापी स्तर पर Alcohol Free Day के तौर पर मनाया जाए। नशा के बढ़ते नक्सनात को समक्ष रखते हुए World Health Organization ने इस बात को भी स्वीकार कर लिया। लेकिन हम जानते हैं कि फिर भी कोई ख़ास परिणाम नहीं निकल रहे हैं। इस का कारण यही है कि क़ाइदीन इन हिदायतों पर गम्भीरतापूर्वक न ख़ुद अनुकरण करते हैं और न क़ानून की पाबंदी के लिए पूरी तरह कोशिश करते हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फरमाते हैं।

"अरब वाले आदी शराब पीने वाले थे। हरमाज़ सम्मान्नीय ख़ानदान में दिन में पाँच बार शराब पी जाती थी...इस किस्म के लोगों से ऐसी तबाह करने वाली आदत छुड़ाना कोई आसान बात ना थी,मगर हिज्रत के चौथे साल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हुक्म नाज़िल हुआ कि शराब हराम की जाती है। इस हुक्म का ऐलान होते ही मुस्लमानों ने शराब पीना बिल्कुल छोड़ दिया...इस महान इन्क़िलाब को पैदा करने के लिए कोई ख़ास कोशिश और मुजाहिदा की ज़रूरत नहीं पड़ी।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन पृष्ठ 158-159)

वास्तव में इस्लाम ने बुनियादी तौर पर एक उसूल बयान किया है कि जो चीज़ मानव जाति को लाभ से अधिक हानि पहुंचाए वह हराम है। अत: अल्लाह तआला फ़रमाता है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا (अलबकर: 220)

अर्थात वे तुझ से शराब और जूए के बारे में सवाल करते हैं। तू कह दे कि इन दोनों में बड़ा गुनाह (भी है और लोगों के लिए लाभ भी। और दोनों का गुनाह (का पहलू) उनके लाभ से बढ़कर है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम फ़रमाते हैं

"अनुभव गवाही दे रहा है कि समस्त गुनाहों की जड़ शराब है क्योंकि वह कुछ मिन्ट में ही मस्त बना कर ख़ून करने तक दिलेर कर देती है और दूसरी किस्म का दुराचार तथा कदाचार उस के ज़रूरी अंग हैं। मैं सच सच कहता हूँ और इस पर ज़ोर देता हूँ कि शराब और तक़्वा हरगिज़ जमा नहीं हो सकते। और जो व्यक्ति उस के बुरे नतीजों से आगाह नहीं वह अक़्लमंद ही नहीं और इस में एक और बड़ी

मुसीबत है कि इस की आदत को तर्क करना प्रत्येक का काम नहीं।"

(गुनाह से नजात कैसे मिल सकती है। रुहानी ख़ज़ाइन भाग 18 पृष्ठ 641)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

" अत: शराब और जूआ इत्यादि जो हैं क्योंकि ख़ुदा तआला ने जूए को भी शराब के साथ वर्णन फ़र्मा कर इस्मुन कबीरुन" फ़रमाया है। ये बुराईयां मुस्लमानों की तबाही का कारण हैं। बल्कि हर एक की तबाही की बुनियाद हैं। क्योंकि ये धर्म से दूर ले जाने वाली हैं। ख़ुदा तआला से दूर ले जाने वाली हैं और जब इन्सान ख़ुदा तआला से दूर चला गया तो फिर अपने ऊपर हलाकत सुहैड़ ली.. अहमदियों को बड़ा फूंक फूंक कर चलने की ज़रूरत है और न केवल अपने आपको उन बुराईयों से बचाना है बल्कि अपनी नस्लों की, अपने बच्चों की खासतौर पर उनकी जो नौजवान हैं, नौजवानी में क़दम रख रहे हैं, हिफ़ाज़त करनी है। इन चीज़ों की, इन बुराईयों के महत्तव को उन पर स्पष्ट करना है।" (ख़ुत्बा जुमा 2 अप्रैल 2010 ई)

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि हम इस्लामी इन सुन्दर शिक्षाओं पर ख़ुद अनुकरण करते हुए दूसरों को भी पहुंचा सकें। आमीन

आमीन

(हाफिज़ सय्यद रसूल नयाज़)

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

एक महान इन्क़िलाब पैदा करें।

इन्सान के जन्म का मूल उद्देश्य वास्तव में हुक़ूक़ुल्लाह के अधीन एक ख़ुदा को जो साझी रहित है, की इबादत करना है। और हुक़ूक़ुल ईबाद के अधीन ख़ुदा के बंदों को तौहीद की दावत देना है। इस के लिए अल्लाह तआला सृष्टि के आरम्भ से लेकर आज तक अंबिया भेजता रहा है और खलीफ़ाओं को अंबिया की उत्तराधिकारी के रूप में खड़ा करता रहा है। जब इन्सान इलाही शरीयतों पर अनुकरण करना छोड़ देता है तो फिर इन्सानी ज़िन्दगी में ख़राबी ,लापरवाही पैदा होती है और क्रमश: दुनिया में अन्धेरा फैल जाता है। इस सृष्टि के जन्म का उद्देश्य ही यह था कि इन्सान को उत्तम कर्मों के बारे में ख़ुदा तआला आज़माऐ। जैसा कि वह फ़रमाता है। وَهُوَ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِیْ سِتَّةِ اَیَّامٍ وَّ كَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ لِیَبْلُوَكُمْ اَیُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا (हूद: 8) अर्थात और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छ: दिनों में पैदा किया और इस का तख़्त पानी पर था ताकि वह तुम्हें आज़माए कि तुम में से कौन बेहतरीन कर्म करने वाला है।

इस दुनिया में इन्सान को अल्लाह तआला ने सर्वोत्कृष्ट सृष्टि के तौर पर पैदा कर के उस की सुविधा और सुन्दरता के लिए हर किस्म की चीजों को न केवल पैदा किया है बल्कि उन्हें प्रयोग करने के लिए सिर्फ इन्सान को दिमाग़ी शक्तियां प्रदान की हैं। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है। اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِیْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَیُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا (अल-कहफ़ 8)

अर्थात: यक़ीनन हमने जो कुछ ज़मीन पर है इस के लिए सुन्दरता के तौर पर बनाया है ताकि हम उन्हें आज़माऐं कि उनमें से कौन बेहतरीन कर्म करने वाला है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"आदमी को बैअत कर के सिर्फ यही न मानना चाहिए कि यह सिलसिला सच्चा है और उतना मानने से उसे बरकत होती है। केवल मानने से अल्लाह तआला ख़ुश नहीं होता जब तक अच्छे कर्म न हों..... क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला ने ईमान के साथ नेक कर्म भी रखा है। नेक कर्म इसे कहते हैं जिसमें एक थोड़ा सा भी फ़साद न हो...अत: एक आदमी भी घर भर में नेक कर्म वाला हो तो सब घर बचा रहता है। समझ लो कि जब तक तुम में नेक कर्म न हो सिर्फ़ स्वीकार करना लाभ नहीं देता।"

(भाग 4 पृष्ठ 274)

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने इस साल पहली तारीख़ को ख़ुत्बा जुम्अ: में मौजूदा महामारी की भयानक परिणाम और दुनिया के हालात का वर्णन फ़रमाते हुए अहमदियों को अपनी ज़िम्मेदारियाँ याद दिलाते हुए समस्त अहमदियों को अपने अन्दर इन्क़िलाब पैदा करने की तहरीक फ़रमाई है। अत:

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं

"अत: हर अहमदी को ध्यान देना चाहिए कि इस के सपुर्द एक बहुत बड़ा काम किया गया है और इस के सरअंजाम देने के लिए पहले अपने अंदर प्यार और मुहब्बत और भाईचारे की फ़िज़ा को पैदा करें अपने परिवेश में अहमदी परिवेश में और फिर दुनिया को इस झंडे के नीचे लाएं जो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बुलन्द किया था और जो अल्लाह तआला की तौहीद का झंडा है, तभी हम अपनी बैअत के मक़सद में कामयाब हो सकते हैं, तभी हम बैअत का हक़ अदा करने वाले बन सकते हैं, तभी हम अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के वारिस हो सकते हैं और तभी हम नए साल की मुबारकबाद देने के और लेने के अधिकारी क़रार दिए जा सकते हैं अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और हर अहमदी मर्द ,औरत, जवान, बच्चा ,बूढ़ा इस बात को समझते हुए यह वादा करे कि इस साल मैंने दुनिया में एक इन्क़िलाब पैदा करने के लिए अपनी समस्त शक्तियों को प्रयोग करना है। अल्लाह तआला उस की हर एक अहमदी को तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।"

(ख़ुत्बा जुमा 1 जनवरी 2021 ई)

समस्त अन्सार भाईयों की सेवा में नए साल की मुबारकबादी पेश करते हुए निवेदन है कि हमें अपने आप को और घरों को बचाने के लिए नेक कर्म करने और सय्यदना हुज़ूर अनवर के उपदेशों पर अनुकरण करने की तरफ़ ध्यान देने की ज़रूरत है। अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन

अताउल मुजीब लोन

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Maqbool Ahmed **Cell : 9949310679**
: 9949209561

Plant Medicine

Special Treatment for : Kidney Failure, Kidney Enlarge, Shrinkage, Kidney Gall Bladder Stone, Piles

H. No. 18-2-69/a, Jangammet, Falaknuma, Hyderabad - 53

Mob: 9008510546

Akmal Tailor

Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT

TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Cell : 09886083030

زبیر احمد شحنہ

ZUBER

Engineering Works
Body Building All Types of
Welding and Grill Works
HK Road - YADGIR-585201
Dist. Gulbarga - Karnataka

क्या हम अन्सारुल्लाह कहलाते हुए अपनी ज़िन्दगियां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इच्छा के अनुसार ढालने की चेष्टा कर रहे हैं।

समापन ख़िताब अमीरुल मोमनीन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़

सालाना इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्लाह यूके दिनांक 15 सितम्बर 2019 ई (अन्तमि भाग..4)

"इस ज़माना में ख़ुदा तआला ने बड़ा फ़ज़ल किया और अपने धर्म और हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ताईद में ग़ैरत खा कर एक इन्सान को जो तुम में बोल रहा है भेजा।" हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं अपने बारे में कि मैं वह इन्सान हूँ जो अल्लाह तआला ने ग़ैरत खा कर भेजा है। " ताकि वह इस रोशनी की तरफ़ लोगों को बुलाए। यदि ज़माना में ऐसा फ़साद और फ़ित्ना न होता और धर्म के मिटाने के के लिए जिस किस्म की कोशिशें हो रही हैं न होतीं तो कोई हर्ज न था परन्तु अब तुम देखते हो कि हर तरफ़ दाएं बाएं इस्लाम ही को समाप्त करने की फ़िक्र है।" हर तरफ़ दाएं बाएं हर जगह देखो इस्लाम को ख़त्म करने की फ़िक्र में, मादूम करने की फ़िक्र "में समस्त क़ौमें लगी हुई हैं।" फ़रमाते हैं "मुझे याद है और बराहीन अहमदिया में भी मैं ने ज़िक्र किया है कि इस्लाम के ख़िलाफ़ छ: करोड़ किताबें लिख कर कर प्रकाशित की गई हैं।" फ़रमाया कि "अजीब बात है कि हिन्दुस्तान के मुसलमानों की संख्या भी छ: करोड़" है। उस समय हिन्दुस्तान में मुसलमानों की संख्या छ: करोड़ थी।" और इस्लाम के ख़िलाफ़ किताबों की गिनती भी इसी क़दर है। यदि इस ज़्यादती संख्या को जो अब तक इन पुस्तकों में हुई है छोड़ भी दिया जाए तो भी हमारे विरोधी एक एक किताब हर एक मुसलमान के हाथ में दे चुके हैं।" और अब तो केवल किताबें नहीं बल्कि हर किस्म के मीडिया के माध्यम से इस्लाम को बदनाम और ख़त्म करने के लिए कोशिशें की जा रही हैं। इसलिए अब हमारी सबसे बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है कि इस्लाम को समझें अपनी हालतों को बेहतर करें और अल्लाह तआला से सम्बन्ध पैदा करें और हक़ीक़ी इस्लाम दुनिया को दिखाने के लिए मैदान में उतरें। आप फ़रमाते हैं कि "यदि अल्लाह तआला का जोश ग़ैरत में न होता और इन्ना ले लहाफ़िज़ू उस का वादा सच्चा न होता तो यक़ीनन समझ लो कि इस्लाम आज दुनिया से उठ जाता। और इस का नाम निशान तक मिट जाता परन्तु नहीं ऐसा नहीं हो सकता। ख़ुदा तआला का पोशीदा हाथ उस की हिफ़ाज़त कर रहा है।" इस्लाम की हिफ़ाज़त कर रहा है। फ़रमाया "मुझे अफ़सोस और दुख इस बात का होता है कि लोग मुसलमान कहला कर नाते ब्याह के बराबर भी तो इस्लाम का फ़िक्र नहीं करते।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 72-73)

अपने आचरण को अत्तम और उच्च स्तर पर ले जाने की नसीहत फ़रमाते हुए आप फ़रमाते हैं

"हमारी जमाअत में बहुत अधिक ज़ोर वालों और पहलवानों की ताक़त रखने वाले अभीष्ट नहीं बल्कि ऐसी शक्ति रखने वाले अभीष्ट हैं जो आचरण की तब्दीली के लिए कोशिश करने वाले हों। यह एक सच्ची बात है कि वह बलवान और ताक़त वाला नहीं जो पहाड़ को जगह से हटा सके। नहीं नहीं। असली बहादुर वही है जो आचरण की तब्दील पर ताकत पाए। अत: याद रखो कि सारी हिम्मत और क़ुव्वत

तब्दील आचरण में व्यतीत करो क्योंकि यही हक़ीक़ी क़ुव्वत और दिलेरी है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 140)

फ़रमाया कि "बात यह है कि ख़ुदा तआला की रजामन्दी जो हक़ीक़ी ख़ुशी का कारण है प्राप्त नहीं हो सकती जब तक अस्थायी तकलीफ़ें बर्दाश्त न की जाएं। ख़ुदा ठगा नहीं जा सकता। मुबारक हैं वे लोग जो इलाही रज़ा के हुसूल के लिए तकलीफ़ की पर्वा न करें क्योंकि स्थायी ख़ुशी और स्थायी आराम की रोशनी इस अस्थायी तकलीफ़ के बाद मोमिन को मिलती है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 76)

तौबा और इबादत की तरफ़ ध्यान दिलाते हुए आप फ़रमाते हैं

"इसलिए इस से पहले कि अज़ाबे इलाही आकर तौबा का दरवाज़ा बंद कर दे तौबा करो। जब कि दुनिया के क़ानून से इस क़दर डर पैदा होता है तो क्या कारण है कि ख़ुदा तआला के क़ानून से न डरें। जब बला सिर पर आ पड़े तो इस का मज़ा चखना ही पड़ता है। चाहिए कि हर एक शख़्स तहज्जुद में उठने की कोशिश करे। और पाँच वक़्त की नमाज़ों में भी क़नूत मिला दें। हर एक ख़ुदा को नाराज़ करने वाली बातों से तौबा करें। तौबा से यह मुराद है कि उन समस्त बुरे कर्मों और ख़ुदा की नारज़गी के कारणों को छोड़कर एक सच्ची तबदीली करें और आगे क़दम रखें और तक़्वा धारण करें। इस में भी ख़ुदा का रहम होता है। इन्सानी आदतों को ठीक करें। ग़ज़ब न हो। विनय और विनम्रता उस की जगह ले ले। आचरण की दुरुस्ती के साथ अपने शक्तियों के अनुसार सच्चाई को धारण करो। وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا (अद्दहर:9)अर्थात ख़ुदा की रज़ा के लिए मिस्कीनों और यतीमों और क़ैदियों को खाना देते हैं और कहते हैं कि ख़ास अल्लाह तआला की रज़ा के लिए हम देते हैं और इस दिन से हम डरते हैं जो निहायत ही भयावह है।

क़िस्सा मुख़्तसर दुआ से, तौबा से काम लो और सदक़ात देते रहो ताकि अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल तथा करम के साथ तुम से मामला करे।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 208)

फिर फ़रमाया (अन्सारुल्लाह के लिए खासतौर पर)

"रातों को उठो और दुआ करो कि अल्लाह तआला तुमको अपनी राह दिखलाय। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा ने भी क्रमश: तर्बीयत पाई। वह पहले क्या थे एक किसान के बीज बोने की तरह थे फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सिंचाई की। आप ने उनके लिए दुआएं कीं। बीज सही था और ज़मीन उम्दा तो इस सिंचाई से फल उम्दा निकला। जिस तरह हुज़ूर अलैहिस्सलाम चलते इसी तरह वे चलते। वे दिन का या रात का इंतिज़ार न करते थे। तुम लोग सच्चे दिल से तौबा करो तहज्जुद में उठो। दुआ करो , दिल को दरुस्त करो। कमज़ोरियों को छोड़ दो। और ख़ुदा तआला की रज़ा के अनुसार अपने कथन तथा कर्म को बनाओ। यक़ीन रखो कि जो इस नसीहत को विर्द बनाएगा और अनुकरणीय रूप से दुआ करेगा और अनुकरणीय रूप से इल्तिजा ख़ुदा के सामने लाएगा। अल्लाह तआला इस पर फ़ज़ल करेगा। और इस के दिल में तब्दीली होगी। ख़ुदा तआला से निराश न हो।

बर करेमां का रहा दुशवार नीस्त।'

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 45)

कि नेक लोगों के लिए कोई भी काम मुश्किल नहीं होता। फिर बड़े दर्द से नसीहत करते हुए और आख़िरत की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए आप हैं:

"अत: मैं फिर पुकार कर कहता हूँ और मेरे दोस्त सुन रखें कि वे मेरी बातों को नष्ट न करें और उन को केवल एक क़िस्सा कहने वाले दास्तान की कहानियों ही का रंग न दें बल्कि मैंने ये सारी बातें निहायत दर्दे दिल और सच्ची हमदर्दी से जो फ़ित्रतन मेरी रूह में है की हैं। उनको दिल के कानों से सुनो और उन पर अनुकरण करो।

हाँ ख़ूब याद रखो और इस को सच समझो कि एक दिन अल्लाह तआला के हुज़ूर जाना है। अत: यदि हम उम्दा हालत में यहां से कूच करते हैं तो हमारे लिए मुबारक और ख़ुशी है वर्ना ख़तरनाक हालत है।"

अन्सार की उम्र तो ऐसी होती है कि उनको तो बड़ी फ़िक्र रहनी चाहिए। फ़रमाया "याद रखो कि जब इन्सान बुरी हालत में जाता है तो दूर का मकान उस के लिए यहीं से शुरू हो जाता है अर्थात नज़ा की हालत ही से इस में परविर्तन शुरू हो जाता है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है

اِنَّهٗ مَنۡ یَّاۡتِ رَبَّهٗ مُجۡرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ؕ لَا یَمُوۡتُ فِیۡهَا وَ لَا یَحۡیٰی ﴿۷۵﴾

(ताहा 75)अर्थात जो शख़्स मुजरिम बन कर आएगा उस के लिए एक जहन्नुम है जिसमें न मरेगा और न ज़िन्दा रहेगा। यह कैसी साफ़ बात है। असल ज़िन्दगी की लज़्ज़त राहत और ख़ुशी ही में है।" जो मुजरिम बन के आएगा उस के लिए एक जहन्नुम है इस में न मरेगा ना ज़िन्दा रहेगा। फ़रमाया कि कैसी साफ़ बात है असल लज़्ज़त ज़िंदगी की राहत और ख़ुशी ही में है "बल्कि उसी हालत में वह ज़िन्दा माना जाता है जबकि हर तरह के अमन तथा आराम में हो। यदि वह किसी दर्द जैसे क़ूलंज या दाँत दर्द ही में पीड़ित हो जाए तो वह मिर्दों से बुरा होता है और हालत ऐसी होती है कि न तो मुर्दा ही होता है और न ज़िन्दा ही कहला सकता है। अत: इसी पर सोच लो।" इसी को सामने रखो जो ज़ाहिरी बीमारियां दुनिया में होती हैं इसी को सामने रखकर देखो "कि जहन्नुम के दर्द-नाक अज़ाब में कैसी बुरी हालत होगी।" (मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 142-143)

अल्लाह तआला हमें हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नसीहतों पर अनुकरण करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए, आप की इच्छाओं के अनुसार आप की बैअत में आने का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। अल्लाह तआला और इस के रसूल के हुक्मों पर अनुकरण करते हुए हम अपनी दुनिया तथा आख़िरत संवारने वाले हों। हक़ीक़ी अन्सारुल्लाह बनने की तौफ़ीक़ अल्लाह तआला हमें प्रदान फ़रमाए और अपनी नसलों के लिए नेक नमूने छोड़कर जाने की तौफ़ीक़ हमें अल्लाह तआला प्रदान फ़रमाए और अल्लाह तआला की रज़ा को हम प्राप्त करने वाले हों। अब दुआ कर लें। दुआ)

(दुआ के बाद हुज़ूर अनवल ने फ़रमाया इज्तिमा की हाज़िरी के बारे में बता दूं। इस बार की हाज़िरी जो है कुल अन्सार की हाज़िरी 3107 है और मेहमान 1515 हैं इस तरह किल हाज़िरी यहां इस वक़्त (4622) है। अन्सार की हाज़िरी में 23 प्रतिशत की वृद्धि है और लजना की हाज़िरी उस वक़्त उनके पास पूरी आई नहीं थी , वहां ऐलान नहीं किया था तो लजना की हाज़िरी जो उस वक़्त हाज़िरी के फाईनल figure हैं 5822 है और पिछले साल से यह भी अधिक है। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से लजना ने भी काफ़ी काम किया है। अल्लाह तआला नेकियों में भी आगे बढ़ने की हम सबको तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

अलस्सलअमु अलैकुम बरहमतुल्लाह बरकातहो

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 03 दिसम्बर 2019 ई)

(समाप्त)